Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –1, Feb - 2011
ISSN:- 2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

गजलकार चंद्रसेन विराट

झाकीरहुसेन बी. मुलाणी

(हिंदी विभागाध्यक्ष)
विट्ठलराव शिंदे आटस कालेज , टेंभुर्णी जि. सोलापूर

सारांश –

हिंदी मे गजल परम्परा बहुत पुरानी है। अरबी.फारसी की इस विधाने संवेदना के साथ संवेदनशील व्यक्तित्वों को अपनी ओर आकर्षित किया। भाव.भावना को सुन्दर ढंग से सजाने के लिए गजल योगदान देती है, उतनी अन्य विधाए नहीं। सौन्दर्य का पान और कोमल भावना का मनोहर चित्रण केवल गजल मं संभव है। हिंदी गजलकारों ने औरों की विधा को आपनाकर अपनी सभ्यता,संस्कार और संस्कृती का जामा पहनाया। फलत: हिंदी मे भाव.भावना को व्यक्त करने के लिए काव्य प्रेमियो के करीब पहुँची।

प्रस्तावना-

आदिकालीन अमीर खुसरों जिन्हे हिंदी का पहला कवि और गजल का प्रणेता बनने का सम्मान प्राप्त हुआ। खुसरों से शुरु हुई गजल की धारा कबीर जी से होती हुई छायावादी कवि तक पहुँची। हिंदी को अंश मे जाननेवालों को अटपटा लगता है की निर्गुण भक्ति धारा के प्रवर्तक विद्रोही, क्रांतिकारी समाज सुधारक संत कवि कबीर की लेखनी इस विधा को प्रवाहित करने में सफल हुई होगी। छायावाद के प्रवर्तक प्रसाद जी ने अपने नाटकों में गजल का अनोखा प्रयोग किया। निराला ने 'बेला' नामक गजल संग्रह लिखा; जिसमें चालीस के आसपास गजले है।

हिंदी गजल कों सौंदर्य प्रदान करने का कार्य समशेर बहादुर सिंह जी ने किया, किंतु सम्मान और प्रतिष्ठा दुष्यंतकुमार के कारण प्राप्त हुआ। दुष्यंत जी के 'साये में धूप' ने हिंदी साहित्य प्रेमियों को झकझोर दिया। प्रेम,इश्क,मुहब्बत की सहज,सुन्दर अभिव्यक्ति करनेवाली गजल दुष्यंत जी के कारण समाज, राजनीति,धर्म,आर्थिकदशा,नैतिकता, आदि की सुन्दर अभिव्यक्ति करने लगी। साधारण पाठकों के जुॅबा को कठीण लगनेवाली सहज, सरल और सुबोध बनी। समाज को केन्द्र में रखकर सभी अंगों में गिरावट आयी मुल्यों पर गजल हिंदी मे आग बरसाने लगी। जैसे.

''हो गयी है पीर पवर्तसी
पीघलनी चाहिए,
हिमालय से कोई गंगा
निकलनी चाहिए।
मेरे सीने में न सही,तेरे सीने मे आग
जलनी चाहिए।'' (साये में धुप . दुष्यंतकुमार)

भारतियों कें मानस को झकझोर ने वाली इस गजल ने हर भारतीय जुॅबा पर अधिकार जमा लिया है। उनकी गजलों में भारतवर्ष के सामान्य जनों की तिखी प्रतिक्रिया एवंम अक्रोश हैं। दुष्यंत जी की उपर्युक्त गजल फिल्म अभिनेता, समाज सुधारक, राजनेता,एवंम भाषण कर्मीयों की बातों को तेज धार दती रही है।

दुष्यंत जी के उपरान्त ३५ से ४० वर्षो तक जिन्होंने हिंदी गजल की सेवा की वह चंद्रसेन 'विराट' जी हैं। समाज कों गजल विधा के करीब खिंचा अपने जरिये उनकी भावनाओं का साधारणीकरण उन्होंने हो किया। सहज साधारण शब्दों मे लिखि गजल 'विराट' के कारण आसान हो गयी सहज अभिव्यक्ति का साधन उन्होंने ही बनया। मूलत: चंद्रसेन 'विराट' गीतकार है। उन्होनें हिंदी साहित्य आकाश को गीतों से सजाया। समय के साथ वह गजल की

ओर खीचें गये। उनके रुजान के बारे में डॉ श्रीराम परिहार लिखते हैं. ''और एक दिन गीत का संकल्प.धर्मी कवि गजल के देश चला आया। ऐसा करके उसने कोई गलती नही की। आखिर गीत के आपने खतरे होते हैं। उसकी अपनी सीमाऍं होती है। अनुभूतियों के दोहराव और छन्दो मे छटा थिगले लगाने की नौबत आने लगती है और गीतकार चुकने लगता है। 'विराट' ने गीत से भी दुगनी ताकत के साथ गजल को हिंदी संस्कार दिया। उसे अपनी जमीन का पहनाबा दिया। उसे अपनी भाषा दी। नयी स्थापना दी। मुघलकालीन गलियारों से निकाल कर हिंदी हरी दुब पन बैठा दिया। हिंदी में बोलने का तर्जुबा दिया तर्ज दी।''

आझादी के उपरांत देश विकास की ओर पग बडाता गया। परिणामत: महानगरों का जन्म हुआ। महानगरों का विकास एकांगी भौतिक रुप में हुआ। किंतु सभ्यता खोए संस्कृति भूले महानगर सौंदर्य से दूर गये। ' चंद्रसेन 'विराट' लिखते है.

''जलता जंगल महानगर
सुखा दल.दल महानगर
खुलती बोतल महानगर
बिकता आचल महानगर
बौने धर झोपड.पट्टी
ऊँचे होटल महानगर।''

डॉ मधु खराटे इस महानगर की विद्रुपता एवंम विसंगति पर लिखते है— ''इन महानगरों में विद्रुपता भी पनपती चली गयी। इन त्रासद स्थितियों का यथार्थ चित्रण 'विराट' जी ने मार्मिकता से किया है।''
एक गजलकार ने खुब लिखा था— ''अपना है और अपनो से अंजान है शहर,सच पुछिये चेहरों की पहचान है शहर, यहॉ टूटते है रिश्तो के ऐने बार—बार एक वेश्या की अधरो की मुस्कान है शहर।'' उपर की गजल इन लब्जों की याद जरुर दिलाती हैं।

गजलकार 'विराट' अनुभूति और अभिव्यक्ति मे विराट है। उपहास और क्रोध को व्यंग्य रुप में सही दिशा देने की कला में वे माहिर हैं। शहर के आदमी का (इन्सान का नही) सुन्दर विचित्र चित्रण करने में वे सिध्दहस्त है। दोहरी जिंदगी गॉव के लोगो की नहीं शहर के आदमी की सच्ची पहचान है। अपनी सभ्यता, संस्कृति इन्सानियत भूला शहर का आदमी इन्सान कम यंत्र अधिक लगता है। भौतिक सुख साधनो की दौड में वह गॉव से बहुत आगे है। मानवता, आपनापन, प्रेम उसके व्यक्तित्व को शोभा नहीं देते। शहरी लोगों की लालसा वृत्ती पर चंद्रसेन विराट करारा व्यंग्य कसते है—

''वैसे बडे जहीन है मेरे शहर के लोग
कुछ .कुछ मगर कमीन है मेरे शहर के लोग
मन से तो है कुरुप किसी प्रेत की तरह
तन से बडे हसीन है मेरे शहर के लोग
संवेदना नहीं है फक्त हाड मॉस के
जैसे कोई मशीन है मेरे शहर के लोग।''

'विराट' जी की गजलों पर प्रकाश डालते हुए डॉ. सुरेश गौतम लिखते है—

विराट की गजलो ने गजल को हुस्न, इश्क, मोहब्बत जाम, साकी, मयखाना की रोमानियत से निकालकर बिजली के नंगे तारों से जोडा और अनादर्शी जिंदगी को पारा—पारा बिखरने से बचाया। हिंदी की बुनावट में गजल बुनकर मनुष्य समाज को जागरुक किया खुद का पहरेदार बनाया। संघर्ष का पथ दिया, उडने को आकाश। राजनैतिक,सामाजिक दुरभिसन्धियों के प्रति क्रुर बनाया और उसे रस—आखेटक दृष्टी दी।

गौतम जी का मन्तव्य घोषणा करता है गजलकार 'विराट' जी आप आपने कर्म—धर्म में सफल हो। अचरज इस बात का है अस्मान मे चॉद—सुरज की तरह चमकने वाला नया 'विराट' चॉद समाज से इतने दिनो क्यों दूर था। विराट की गजले सम—सामायिक युग का सच्चा चेहरा है समस्याओं के साथ सहज सौंदर्य विद्रुपता के संग व्यंग्य उनके अल्फाजों को सौंदर्य प्रदान करते है। फलत: उनकी गजल सुक्ष्म भाव से लेकर गंभीर विषय का चित्रण करने में सक्षम है। वह व्यवस्था ने प्रति क्रोध को व्यक्त करते—करते समस्या उजागर करते ही है किंतु सामान्यजनों का मार्गदर्शन भी करते है। इस दौर के कुत्ते हक्क के लिए कॉटते तक है, इस दौर का आदमी चुप (खामोश) है, गजलकार को अच्छा नहीं लगता। दुष्यंतकुमार की तरह वह लोगों को झकझोर देते है। उन्ही कें शब्दों में—

''आप अपना हक न पायेंगे बिना फुँकार के
शुध्द कायरता कहता आपका अक्रोध है
भृकुटि तानी आपने सब नमस्ते कर रहे
आप अब मुद्रा यही धारण करें,अनुरोध है।
हम व्यवस्था के वनो में घिर चुके है इस तरह
अब दिशा सूचक नहीं है, खो चुका दिग्बोहा है। ''

'विराट' जी को सामान्यजनो की चिंता है, उन्हें खोकला बनानेवाले तत्व कों छोडकर भृकुटि तान ने की सलाह देना असान नही है, किंतु कारगर है,वरना जुल्म करनेवाले कायरता का लेबल सहल चिपकायेंगे। आज राजनेताओं के कारण हम हमारे ही घरों में कायर बने है। व्यवस्था के वनों से उभरने की चुनौती अच्छी राह है। अभिव्यक्ति में इमानदारी कल्पना सपनों से नही अनुभुती से प्राप्त होती है। उनकी गजले आशियाना न बना सके किंतु सामान्यजनों को हक का छत देनेवाली जरुर है। साहित्यकारों को कर्तव्य के प्रति सजग बनानेवाले उनके शब्द गलत लोगों के सम्मान से क्रुध्द होते है, वह खामोश नही रह सकते, क्योंकि गजलकार स्वंय को जिंदा रखना चाहता है, विराट जी के शब्दों में—

''मौलिक सृजन है ओट में कोरे प्रचारों की वजह
जुगनू बने है सूर्य, इन अनुवादकों से क्या कहे
खुद को निरामिष कह रहे उन भेडियों से दोस्ती
भोले जरुरत से अधिक मृग शावकों से क्या कहे
आरोप यह पिढी नई है, क्रुध्द, अनुशासित नहीं
दायित्व खुद भूले हुए अभिभावकों से क्या कहे।''

व्यंग्य के तेवर कडे हैं, औरों पर आरोप करने के बजाय, अपने गिरेबान को देखना जरुरी हैं, भोले बनकर शिकार होने के बजाय,शिकारी होना बेहद जरुरी है। बोलबोला सूर्य की चमकने का नहीं है,जुगनूओं के टिमटिमाने का हैं। दायित्व के प्रति इमानदारी इन्सान की पहचान हैं, ज्यों भूले है विराह की दृष्टि में जानवर है। विराह की गजल उपेक्षित लोंगों के दर्द को अलफाज देनेवाली है. जैसे—

''हर उपेक्षित आदमी के दर्द को
मैं सही अलफाज देता रह गया ।

चंद्रसेन 'विराट' की गजल आज के राजनेताओं पर आग बरसाती हैं, क्योंकि उन्होंने सियासत को 'चील का घोसला' बना दिया है। हर पल शिकार पर झपट ने वाली चिले और आज के राजनेता अलग नहीं है, उन्हीं के शब्दों में .''

'' ये सियासत ! उणे घर चलेगें
ये जगह ही नहीं सज्जनों की
तू कहॉ सियासत में आया यहॉ
चील का यह घोसला है बोल मत।''

आम आदमी की तरी ही गजलकार के मन में राजनेता एवं राजनीती के प्रति क्रोध स्वाभाविक रुप में व्यक्त हुआ है। राजनेताओं को कथनी —करनी में मेल नहीं है, योजनाओं का आयोजन ठीक से न करने वालें खुर्सी के भुके सफेदपेशा जानवरों पर विराह बरसते हैं जैसे—

'' खूब आश्वासनों के दिये झुनझुने
अब तो आश्वासनों पर अमल चाहिए
आज तो कट गया, भख सो गयी
रोटियॉ किंतु निश्चित ही कल चाहिए।''

गजलकार चंद्रसेन 'विराट' सामान्यजनों के दर्द को देखकर भावूक होते है। इन की पिडा और विसंगतियों ने इन्हे मौत से पहले ही मार दिया है। मॉग ने से छिनना गजलकार को कारगर लगता है, नहीं तो यह कारगर है इस सफर के लिए। सामान्यजनों का दर्द उनकी गजलो में जहॉ—तहॉ है, जैसे—

''घिसी चप्पल, फटा कुरत,बढी दाढी,चढा चष्मा
रहे यदि पेट भी खाली,तुम्हें क्या फर्क पडता है
तुम्हें ज्वर हड्डियों वाला, पोलियो—ग्रस्त है मुन्ना
खॉसती क्षय से घरवाली, तुम्हे क्या फर्क पडता है।''

यह दर्द की दॉसता खत्म नहीं होती, एक प्रकार कि खीच और घुस्सा व्यवस्था के प्रति बढता है। दिल को तार—तार करनेवाले सच्चाई से पाठक परेशान हो जाता है, और एक क्रोध को बढावा देनेवाली गजल का शेर—

''अम्मा का चष्मा बनवाना था, बापू का
कुरता बिल्कुल तार—तार है शेष कुशल है।''

निष्कर्ष चंद्रसेन 'विराट' जी गजले समसामायिक युग का सच्चा दस्तावेज है। उन्होंने राजनीति, विसंगति, कायरता, गरीबी, शोषण, झूट, खोकले चेहरे, बिगडते शहर, रिश्ते आदि पर कभी उपहास से तो कभी क्रोध से व्यंग्य किया है। उनकी गजले गरीबों के प्रति इमानदार है। गजलकार आझादी के उपरांत देश में बदलाव देखना चाहता था, नहीं बदल उसकी खींच उनकी गजलों में खास रुप में है। अन्ततः चंद्रसेन विराट गजल क्षेत्र में मिल के पत्थर है।

संदर्भ —

१. साये में धूप— दुष्यंतकुमार—
२. चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधी हिंदी गजले—संपा. डॉ. मधु खराटे
३. धार के विपरित— चंद्रसेन विराट
४. व्यंग्य ही युगबोध है— 'इस सदी का आदमी'— चंद्रसेन विराट
५. क्या कहे? 'निर्वसना चॉदनी'—चंद्रसेन विराट
६. आवाज देता रह गया—'निर्वसना चॉदनी'—चंद्रसेन विराट
७. धार के विपरित— चंद्रसेन विराट
८. खुले तीसरी ऑख— चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधी हिंदी गजले—संपा. डॉ. मधु खराटे
९. धार के विपरित— चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधी हिंदी गजले—संपा. डॉ. मधु खराटे
१०.कुचनार की टहनी— चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधी हिंदी गजले—संपा. डॉ. मधु खराटे